तृतीय अध्याय

ठुमरी विधा के अंतर्गत

लोक संगीत

के प्रकार

तृतीय अध्याय
ठुमरी विधा के अंतर्गत लोक संगीत के प्रकार

भारत में विविध प्रान्तों में लोक संगीत के कई प्रकार प्रचलित हैं | हर एक प्रांत की अपनी विशिष्ट लोक संस्कृति के अनुसार कई प्रकार के लोक नृत्य, लोक गीत एवं लोक नाट्यों का उस प्रान्त के जन समुदाय में प्रचार होता है | इस शोध कार्य का सम्बन्ध उपशास्त्रीय विधा ठुमरी से है जिसका उद्गम तथा विकास पूर्वीय उत्तरी भारत में स्थित 'दोआब' नामक क्षेत्र में हुआ | 'दोआब' अर्थात् 'दो नदियाँ' | अत: उत्तर भारत की दो बड़ी नदियाँ – गंगा और यमुना – इनके बीच का तथा दोनों किनारों का प्रदेश साधारण रूप से 'दोआब' के नाम से जाना जाता है | इसी प्रदेश के लोक संगीत में उपयुक्त लोक गीतों ने 'ठुमरी' की विकास प्रक्रिया के दौरान काफी प्रभाव डाला है | ठुमरी के विकास तथा इतिहास पर ध्यान देने पर ऐसा प्रतीत होता है कि इस विधा को उसके वर्तमान परिपक्व रूप में पहुंचाने में जिन कलाकारों के वर्गों का योगदान रहा है उनमें शास्त्रीय सगीत के कलाकार, कथक नर्तक तथा इन दोनों से तालीम लेनेवाली तवायफें इनका समावेश होता है | इसी प्रकार जिन संगीत शैलियों का इस कार्य में योगदान रहा वे थीं उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत तथा पूर्वीय उत्तर भारत का लोक संगीत |

पूर्वीय उत्तर भारत में जो जो स्थान ठुमरी की विकास प्रक्रिया के केंद्र रहे उनके आस-पास के प्रदेशों की लोक संस्कृति ने इस विधा के साहित्य और सांगीतिक पक्षों पर प्रभाव डाला | ठुमरी के विकास और प्रचार-प्रसार के केंद्र लखनऊ, बनारस, पटना और गया ये रहे | अत: इन नगरों के आस-पास के प्रदेशों की भाषा एवं लोक संगीत इनका ठुमरी विधा पर असर हुआ | बनारस में ठुमरी के विकास में लोक गीतों का इतना प्रभाव रहा है कि अब लोक संगीत के कुछ गीत प्रकारों का परिष्कृत रूप 'ठुमरी' विधा में ही माना जाता है |

उदाहरण : चैती, कजरी, होली, सावन, झूला |

3.1 चैती

'चैती' उत्तर भारतीय लोक संगीत का एक प्रसिद्ध गीत प्रकार है जो कि उत्तर प्रदेश और बिहार के समस्त प्रदेश में बहुत ही प्रचलित है | अब 'ठुमरी' विधा के अंतर्गत कलाकारों द्वारा इसका उपशास्त्रीय ढंग से प्रस्तुतिकरण

होने के कारण इसको उपशास्त्रीय गीत प्रकार का स्थान मिल चूका है | मैथिलि में चैती गीतों को 'चैतावर' और मगही में 'चैतार' भी कहते हैं | [106]

'चैती' नाम से ही संकेत मिलता है कि इसका गायन भारतीय पंचांग के 'चैत्र' या 'चैत' मास से सम्बंधित है | डॉ. नम्रता मिश्र के मत से इसका गायन फाल्गुन पूर्णिमा की रात्रि से ही प्रारम्भ हो जाता है तथा संपूर्ण चैत में इसका गायन-वादन होता है | [107] फाल्गुन पूर्णिमा यानि कि होली वसंत ऋतू के आगमन का सन्देश देती है | परंपरा के अनुसार चैत्र मास के अंत तक वसंत ऋतू माना जाता है | इसी समय के दौरान उत्तर भारत के पूर्वी उत्तर प्रदेश बिहार के प्रान्तों में 'चैती' नामक लोकगीत गाये जाते हैं | चैत्र मास मुखत: वसंत ऋतू, फसल कटाई तथा होली और राम जन्म जैसे उत्सवों से सम्बंधित होने के कारण चैती गीतों का साहित्य इन विषयों के इर्द-गिर्द घूमता है | चैती के पदों में अधिकतर श्रृंगार रस का परिपोष होता है |

3.1.1 चैतियों के प्रकार [108]

चैती में वर्णित विषयवस्तु, गायन शैली एवं गीतों के सामान्य स्वरुप के आधार पर तीनप्रकार पाए जातें हैं :

1) चैता

2) चैती

3) घाटों

3.1.1.1 चैता

चैता को पुरुष प्रकार माना जाता है | इसका गायन उपशास्त्रीय ढंग से न होकर लोक संगीत के अंतर्गत ही होता है | [109] इश्वर आराधना एवं इश्वर स्तुति मुख्य इसके विषय हैं |

उदाहरण:

अवध में बाजेला बधईया हो रामा, अवध नगरिया |

---

[106] जैन, शां. (2012). चैती. पृष्ठ 25.

[107] मिश्रा, न. (2011). *पूर्वी उत्तर प्रदेश की प्रसिद्ध लोक गीत विधा- चैती.* उत्तर प्रदेश की लोक संस्कृति परंपरा और प्रतिबिम्ब. पृष्ठ 68.

[108] An interview of Pt. Channulal Mshra on youtube.com
Guftagoo with Pt. Channulal Mishra retrieved from https://youtu.be/YyeaNBAK-3A

[109] मिश्रा, न. (2011). *पूर्वी उत्तर प्रदेश की प्रसिद्ध लोक गीत विधा- चैती.* उत्तर प्रदेश की लोक संस्कृति परंपरा और प्रतिबिम्ब. पृष्ठ 69.

राम, लछमन, भरत, शत्रुघन

जनम लिए चारों भईया हो रामा, अवध नगरिया | [110]

3.1.1.2 चैती

यह प्रकार चैती गीतों में स्त्री प्रकार माना गया है और अधिकतर स्त्री सुलभ विषयों को लेकर गाया जाता है | चैती में मुख्यता: नायिका के मनोभावों का वर्णन रहता है, जैसे कि प्रियतम का विरह, आभूषण का खो जाना, ससुराल के व्यक्तियों का वर्तन आदि |

प्रकाशित पुस्तकों में उपलब्ध ठुमरी विधा की रचनाओं में केवल 1 ही रचना 'चैती' गीत प्रकार की है |

क्र.	ठुमरी	राग	ताल	प्रकार	विषय	स्रोत
267	चैतर मासे सब मिल गायें	मि. मांज खमाज	द्रुत दीपचंदी	दादरा/चैती	चैत वर्णन-वसंतऋतू	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे

इस शोध कार्य के अंतर्गत ठुमरी के रिकॉर्डिंग का संग्रह किया है उसमें 8 रिकॉर्डिंग 'चैती' गीतप्रकार के हैं |

क्र.	गीत	प्रकार	विषय	ताल	राग	गायक
32	चढल चईत चीत लागे ना रामा...	चैती	सामान्य नायिका के मनोभाव	म.दीपचंदी	मि. मांज खमाज	गिरिजा देवी
41	रात हम देखीला सपनवा हो...	चैती	सामान्य नायिका के मनोभाव	म.दीपचंदी	मि. तिलक कामोद	गिरिजा देवी
46	कुहू कुहू बोलैली कोयलीया हो	चैती	सामान्य नायिका के मनोभाव	म.दीपचंदी	मि. तिलक	छन्नुलाल मिश्रा

[110] मिश्रा, न. (2011). *पूर्वी उत्तर प्रदेश की प्रसिद्ध लोक गीत विधा- चैती.* उत्तर प्रदेश की लोक संस्कृति परंपरा और प्रतिबिम्ब. पृष्ठ 69.

	रामा...				कामोद	
47	कैसे सजन घर जैबे हो रामा...	चैती	सामान्य नायिका के मनोभाव	म.दीपचंदी	मि. तिलक कामोद	छन्नुलाल मिश्रा
64	सेजिया से सैंया रूठ गईले	चैती	सामान्य नायिका के मनोभाव	म.दीपचंदी	मि. मांज खमाज	छन्नुलाल मिश्रा
65	सेजीया से सैया	चैती	सामान्य नायिका के मनोभाव	म.दीपचंदी	मि. मांज खमाज	छन्नुलाल मिश्रा
70	चैतर मासे सब मिल गाये...	चैती	चैत वर्णन	म.दीपचंदी	मि. मांज खमाज	धनाश्री पंडीत
139	सपना देखीला पलकनवा हो रामा...	चैती	सामान्य नायिका के मनोभाव	म.दीपचंदी	मि. मांज खमाज	शुभा मुद्गल

इस प्रकार के गीतों का गायन उपशास्त्रीय संगीत में पूरब अंग के कलाकारों द्वारा प्रचुरता से हुआ है | प्रसिद्ध कलाकारों ने गाई हुई कुछ पारंपरिक चैतियाँ इस प्रकार से हैं :

1) PT CHANNULAL MISHRA-banarasi ang-chaithi.mp4

पं. छन्नुलाल मिश्र--सेजिया से सैंया रूठ गईले हो रामा

स्थायी—सेजिया से सैया रूठ गईले हो रामा

कोयल तोरी बोलियाँ |

अंतरा 1— रोज तू बोलैली सांझ सवेरवा

आज काहे बोलैली आधी रतिया हो रामा

कोयल तोरी बोलियाँ |

अन्तरा 2—होत भोर तोर खोतवा उजडाबो

और कटाइबो बन बगिया हो रामा

कोयल तोरी बोलियाँ |

स्थायी

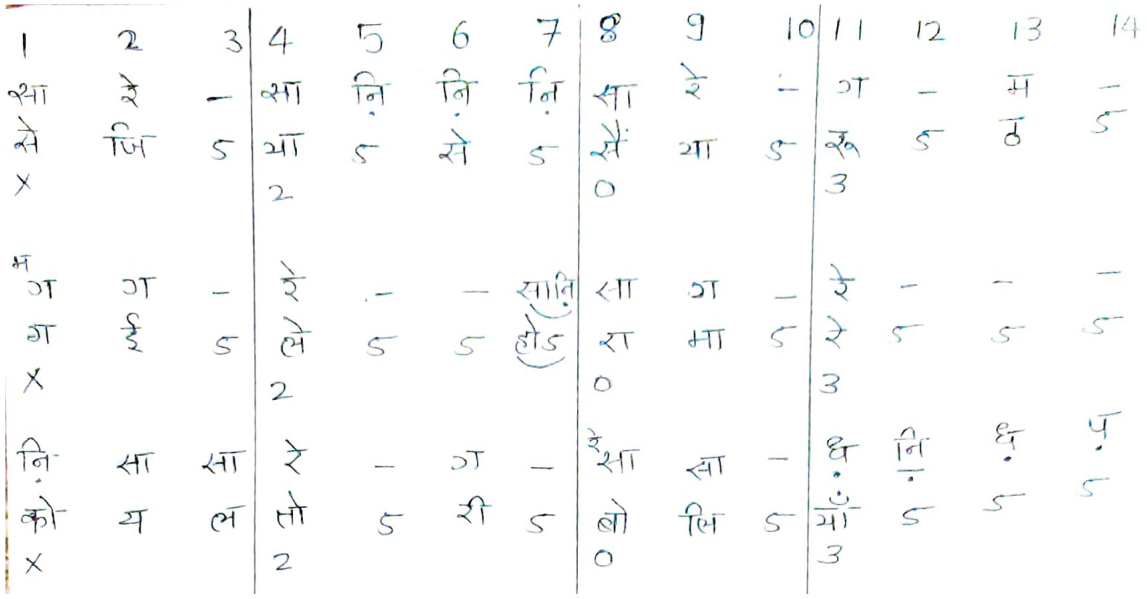

अंतरा1

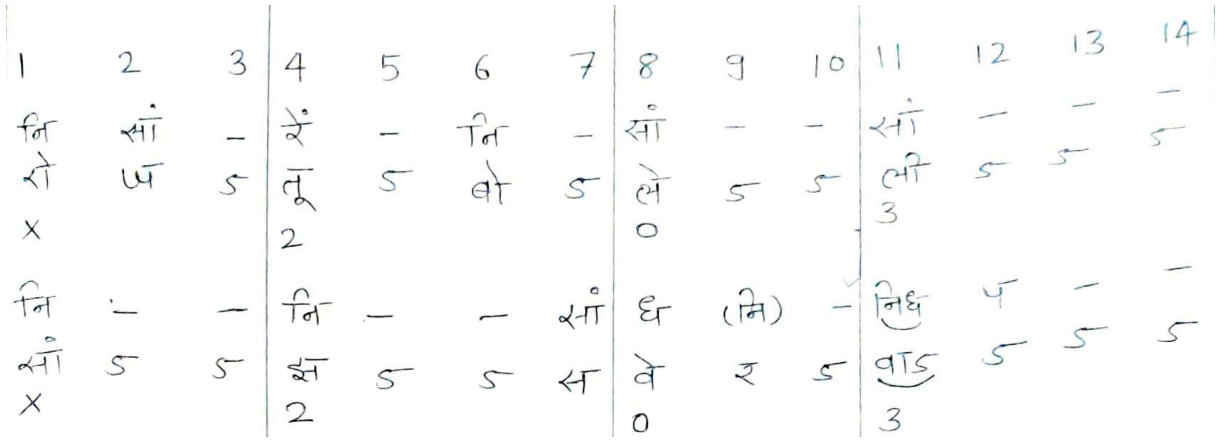

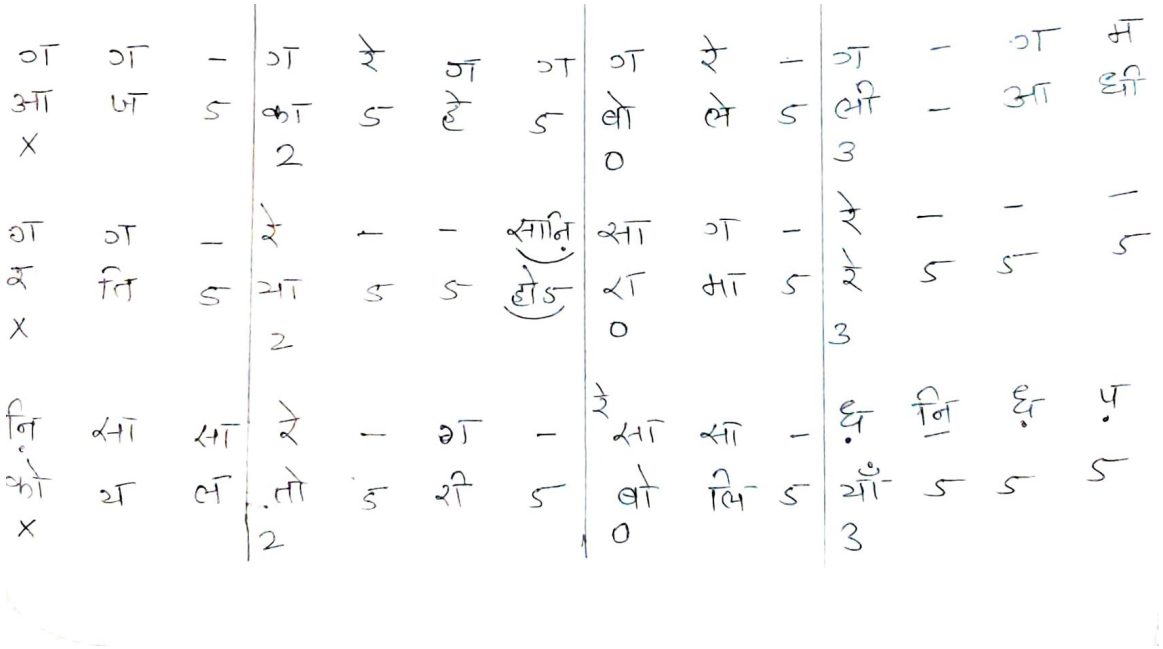

शेष अंतरा की रचना इसी धुन पर हुई है | रिकॉर्डिंग में रंजकता हेतु अंतरा का प्रस्तुतीकरण भिन्न प्रकारांतर (variation) से किया गया है | परन्तु उपरोक्त मूलभूत स्वरलिपि की धुन पर चैती के सभी अंतरा का गायन हो सकता है |

2) Chadal Chait Chit Lagena Rama (Folk).mp3

श्रीमती गिरिजा देवी- चढल चईत चित लागे ना रामा

स्थायी—चढल चईत चीत लागे न रामा
बाबा के भवनवा |

अंतरा—बीर बमनवा सगुन बीचारो
कब होए पिया से मिलन हो रामा
बाबा के भवनवा |

अंतरा—याद आवत जब पिया की बतिया
उर बीच उठत दहनवा हो रामा

बाबा के भवनवा |

स्थायी

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
प़	ध़	—	सा	—	सा	—	रेग	सा	रे	ग	—	म	—
चां	द	ऽ	ल	ऽ	चं	ऽ	ईऽ	त	ऽ	चि	ऽ	त	ऽ
x			२				०			३			
(रे)ग	—	—	रे	—	—	सानि़	सा	रे	—	(ग)रे	—	—	—
भा	ऽ	ऽ	गे	ऽ	ऽ	नाऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
x			२				०			३			
सा	सा	—	रे	—	ग	रे	सा	सा	—	(नि)ध़	—	प	—
बा	बा	ऽ	के	ऽ	भ	ऽ	व	न	ऽ	वां	ऽ	हो	ऽ
x			२				०			३			

अंतरा

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
प	—	म	ग	—	म	ग	प	प	—	प	—	—	—
बी	ऽ	ऽ	र	ऽ	ब	ऽ	म	न	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ
x			२				०			३			
मे	मे	—	प	—	—	प	ग	प	—	म	—	ग	—
स	गु	ऽ	न	ऽ	ऽ	बि	चा	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
x			२				०			३			
ग	ग	—	ग	—	ग	—	ग	रे	—	ग	—	म	—
क	ब	ऽ	हो	ऽ	य	ऽ	पि	या	ऽ	से	ऽ	मि	ऽ
x			२				०			३			
रे	रे	—	(ग)रे	—	सानि़	नि़	नि़सा	रेसा	नि़	सा	रे	—	—
ल	न	ऽ	वा	ऽ	ऽऽ	हो	रा	ऽऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
x			२				०			३			

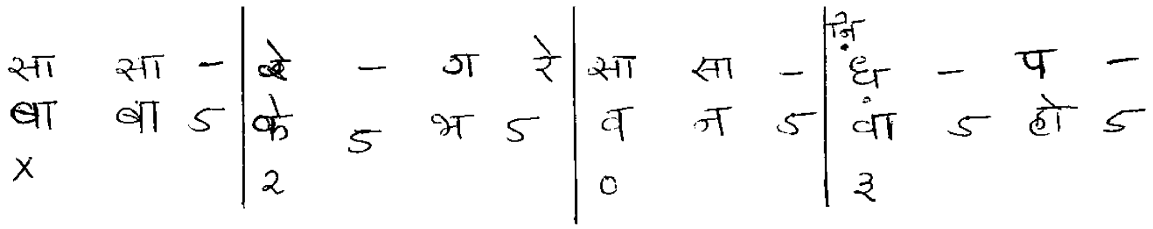

शेष अंतरा की रचना इसी धुन पर हुई है | रिकॉर्डिंग में रंजकता हेतु अंतरा का प्रस्तुतीकरण भिन्न प्रकारांतर (variation) से किया गया है | परन्तु उपरोक्त मूलभूत स्वरलिपि की धुन पर चैती के सभी अंतरा का गायन हो सकता है |

3) 03_SAPNA_DEKHILA_BALA_BALAN.MP3

श्रीमती शुभा मुद्गल - सपना देखिला पलकनवा हो रामा

स्थायी— सपना देखिला पलकनवा हो रामा
के सैया के आवनवा |

अंतरा—पहिले होइले सैया अइले आंगनवा
हम ले जाई जलपनवा हो रामा
के सैया के आवनवा |

अन्तर—बोलत बतियावत कछुक घरी बीते
खात खियावत पनवा हो रामा
के सैया के आवनवा |

अंतरा—**पूरबी सारी जरत किनारी**
और/अवर ले अइले कंगनवा हो रामा
के सैया के आवनवा |

अंतरा—सूरज चहिले गरवा लगावल
फूली गईले पलक पापनवा हो रामा
के सैया के आवनवा |

- **उपशास्त्रीय संगीत में ठुमरी के अंतर्गत समाविष्ट चैती उसके लोक रूप से अपेक्षाकृत अधिक शिष्ट एवं पूरब अंग के विशिष्ट बोल-बनावों के साथ प्रस्तुत होती है |**

- **सामान्य रूप से चैती की रचना में एक स्थायी तथा एक/ एक से अधिक अंतरे पाए जाते है | रचनाएँ सामान्यत: अवधी, भोजपुरी और इन दोनों का मिले-जुले रूप में मिलती हैं |**
- **राम जन्म से सम्बंधित चैत्र मास में प्रस्तुत होने के कारण परंपरागत रूप से इन गीतों में 'हो रामा' या 'रामा' ये शब्द अनिवार्य रूप से पाए जाते हैं |**
- **इसका गायन सदैव दीपचंदी ताल में ही किया जाता है, किन्तु कभी भी उसकी लय विलंबित नहीं रहती | सदैव मध्य या मध्य-द्रुत लय का निर्वाह होता है |**
- **पूरब अंग के कलाकारों द्वारा चैती गायन जिस धुन के आधार पर किया जाता है उसका साधारण स्वरुप राग मांज खमाज के स्वरों से मिलता जुलता होता है | उसमें भी ख़ास कर मूल रचना या धुन मांज खमाज/ मि. मांज खमाज के स्वरों पर आधारित पाए गईं हैं जबकि विस्तार की क्रिया में कभी कभार मांज खमाज के साथ साथ राग पहाड़ी के स्वर समूह भी दिखते हैं | दोनों ही रागों के बीज रूप लोक धुनों में प्रचुरता से पाए जाते हैं |**

3.1.1.3 घाटों

'घाटों' शब्द 'घोटना' क्रिया से बना है | 'घोटना' का अर्थ खूब मथना या बिलोना होता है | चैती गीतों के इस प्रकार को प्राय: समूह में, नव वर्ष के स्वागत के लिए गाया जाता है | इसके साहित्य में अधिकांश रूप से श्री राम तथा अयोध्या में उनके जन्म का वर्णन ही रहता है | श्रीमती मालिनीजी अवस्थी ने एक कार्यक्रम में कहा है कि 'घाटो' को एकल नहीं गाया जाता | [111] साधारण रूप से समूह में गाते समय इसकी साथ संगत के लिए ढोलक, झांझ और लय में तालियों का उपयोग किया जाता है | द्रुत दीपचंदी के सदृश ठेका बजाया जाया जाता है किन्तु लोक परिवेश में ताल के ताली और खाली का निर्वाह शास्त्रीय रूप से नहीं भी होता |

3.2 होली

भारत में होली का त्योहार वसंत ऋतू के मुख्य त्योहारों में से एक है | वसंत ऋतू के फाल्गुन मास की पूर्णिमा को होनेवाले 'होलिकोत्सव'/ 'होली' के अवसर पर उत्तर भारत में विविध प्रकार के गीत गाए जाने की परंपरा है

[111] **Malini Awasthi | Folk Of India | Ghato-Chaita | Indian Folk Song | New Year Song retrived from https://www.youtube.com/watch?v=HZFgWWGguRk&feature=youtu.be**

| इन गीतों को 'होरी', 'होली', 'चाँचर', 'चहका' इत्यादि नामों से जाना जाता है | 'होरी' प्रकार धमार ताल में ध्रुपद शैली में गाया जाता है और उपशास्त्रीय विधा ठुमरी की शैली में अन्य प्रकार सुनने को मिलते हैं जैसे कि 'होली दीपचंदी'/ 'चाँचर', 'होली' |

इस शोध कार्य के अंतर्गत ठुमरी के रिकॉर्डिंग का संग्रह किया है उसमें 11 रिकॉर्डिंग 'होली' गीतप्रकार के हैं |

अनु. नं.	गीत	प्रकार	विषय	ताल	राग	कलाकार
3	का संग खेलूँ मैं फाग	ठुमरी/होली	श्रीकृष्ण-होली	म.दीपचंदी	सोहनी	अजोय चक्रवती
6	देखो अली होली खेलत नंदलाल रे...	ठुमरी/होरी	श्रीकृष्ण-होली	म.त्रिताल	धनाश्री	अजोय चक्रवती
22	मोरे कान्हा जो...	दादरा/होली	श्रीकृष्ण	दादरा	पिलू	आरती अंकलीकर-टिकेकर
24	होरी खेले कान्हा...	दादरा/होली	श्रीकृष्ण- होली	कहरवा	पहाडी	आरती अंकलीकर-टिकेकर
26	उडत अबीर गुलाल	होली	होली-श्रीकृष्ण	कहरवा	मि. गारा	गिरिजा देवी
27	ऐसी होली ना खेलो कन्हाई	दादरा/होली	होली-श्रीकृष्ण	दादरा	पिलू	गिरिजा देवी
56	बरजोरी करो ना मोसे होरी में...	होरी	होली-सामान्य नायिका के मनोभाव	कहरवा	पिलू	छन्नुलाल मिश्रा

60	रंग डारूंगी नंद के लालन पर...	होली	श्रीकृष्ण	म.दीपचंदी	मि. तिलक कामोद	छन्नुलाल मिश्रा
109	कैसी ये धूम मचाई	ठुमरी/होली	श्रीकृष्ण	जत १४ मात्रा	काफी	बेगम अखतर
143	आज बिरजमें होली है रसिया...	होली/दादरा/ रसिया	श्रीकृष्ण-होली	कहरवा	धून	शोभा गुर्टू
163	बरजोरी करोना मोसे होरी में...	दादरा/होली	होली- श्रीकृष्ण	कहरवा	पिलू	सविता देवी

प्रकाशित पुस्तकों में उपलब्ध ठुमरी विधा की रचनाओं में 27 रचनाएँ 'होली' गीत प्रकार की हैं |

42	घागर सारी डार गयो	खमाज	दीपचंदी	होली	सामान्य नायिका के मनोभाव	ठुमरी तरंगिणी – राजाभैया पूछवाले
43	होरी खेलत मोसे नहीं	खमाज	दीपचंदी	होली	सामान्य नायिका के मनोभाव	ठुमरी तरंगिणी – राजाभैया पूछवाले
44	कन्हैया ने घेर लई	एक धुन	दीपचंदी	होली	कृष्णलीला	ठुमरी तरंगिणी – राजाभैया पूछवाले
45	ऐसी होरी खिलाई	काफी	दीपचंदी	होली	कृष्णलीला	ठुमरी तरंगिणी – राजाभैया पूछवाले

56	ऐसे ब्रिज के का हो तुम इजारदार	काफी	वि. दीपचन्दी	होली- होली	कृष्णलीला- होली	नर्तक म. शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग १ – न. शं. भावे
62	ब्रिज में हर होरी मचाई	काफी	वि. दीपचंदी	होली- होली	कृष्णलीला- होली	नर्तक म. शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग १ – न. शं. भावे
63	भर मारी पिचकारी दैया मोहे	काफी	वि. दीपचंदी	होली- होली	कृष्णलीला- होली	नर्तक म. शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग १ – न. शं. भावे
67	होरी आज हो, हो रही नन्द-द्वार	काफी	त्रिताल	होली- होली	कृष्णलीला- होली	नर्तक म. शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग १ – न. शं. भावे
82	रंग माँ भिन्जोए दई एरी मोहे	गारा	वि. दीपचंदी	होली- होली	कृष्णलीला	नर्तक म. शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग १ – न. शं. भावे
86	आज मची ब्रिज भीतर होरी	जंगला	दीपचंदी	होली- होली	कृष्णलीला- होली	नर्तक म. शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग १ – न. शं. भावे
87	फाग खेलत ब्रिज आये बिहारी	जंगला	दीपचंदी	होली- होली	कृष्णलीला- होली	नर्तक म. शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग १ – न. शं. भावे

174	काहे रोकत मग	तिलंग	दीपचंदी	होली	होली	म. नर्तक शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग २-- न. शं. भावे
204	फाग रची हूँ अकेली	पीलू-बरवा	वि. दीपचंदी	होली	होली	म. नर्तक शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग २-- न. शं. भावे
249	भर-भर मारत रंग पिचकारी	मि. काफी	दीपचंदी	ठुमरी/होली	होली-कृष्णलीला	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
250	देखत है सब ब्रिज की नारी	मि. काफी	दीपचंदी	ठुमरी/होली	होली-कृष्णलीला	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
260	ना डारो ना डारो रंग ना डारो	मि. तिलंग	दादरा	दादरा/होली	होली-सामान्य नायिका के मनोभाव	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
262	कौन संग मैं खेलूँ होरी	मि. झिंझोटी	दीपचंदी	ठुमरी/होली	कृष्णलीला-होली	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
267	चैतर मासे सब मिल गायें	मि. मांज खमाज	द्रुत दीपचंदी	दादरा/चैती	चैत वर्णन-वसंतऋतू	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
277	होरी खेले कान्हा सखी	मि. पहाड़ी	द्रुत केहरवा	दादरा/होली	होली-कृष्णलीला	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे

280	रंग डारो ना डारो मोपे साँवरिया	मि. पीलु	द्रुत केहरवा	दादरा/होरी	होली-कृष्णलीला	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
290	रंग डार गयो मोपे साँवरिया	मि. गारा	द्रुत केहरवा	दादरा/होली	होली-कृष्णलीला	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
300	होरी आज जरे	खमाज	दीपचंदी	होली	सामान्य नायिका के मनोभाव	हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका भाग २ – वि. ना. भातखंडे
301	अचरा छोरो अब जाए दयो	खमाज	दीपचंदी	होली/चाचर	कृष्णलीला	हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका भाग २ – वि. ना. भातखंडे
303	होरी खेलत मोसे नई रे	खमाज	दीपचंदी	होली	सामान्य नायिका के मनोभाव	हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका भाग २ – वि. ना. भातखंडे
312	ब्रिज में हरि होरी मचाई	काफी	दीपचंदी	होली	कृष्णलीला-होली	हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका भाग २ – वि. ना. भातखंडे
313	निकाला निराला अलग सबसे रंग	काफी	दीपचंदी	होली	सामान्य नायिका के मनोभाव-होली	हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका भाग २ – वि. ना. भातखंडे

321	कौन खेले तुमसे होरी कन्हैया	कालिंगडा	वि. दीपचंदी	होली	कृष्णलीला-होली	हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ३ – वि. ना. भातखंडे

- **इन गीतों में वर्ण्य विषय के रूप में 'श्रीकृष्ण से सम्बंधित ब्रज की होली' तथा 'होली के वातावरण में सामान्य नायिका के मनोभाव' पाए जाते हैं |**
- **ठुमरी विधा के अंतर्गत होली की रचनाओं में काफी,मिश्र काफी, बरवा, पीलू, गारा, मिश्र गारा, खमाज, भैरवी, सिंध काफी, जंगला, तिलंग, मिश्र तिलंग, देस, पहाड़ी, मिश्र पहाड़ी, धनाश्री, कालिंगडा, मिश्र झिंझोटी, खम्भावती, बहार ये राग पाए गए हैं | इनमें से काफी, मिश्र काफी, पीलू, मिश्र पीलू, जंगला, पहाड़ी, मिश्र पहाड़ी इस तरह के लोकधुनों के रागों का प्रमाण अधिक दिखता है |**
- **इन गीतों में दीपचंदी ताल का प्रचुर मात्र में उपयोग हुआ है | लोक संगीत में इस ताल के रूप को 'चाँचर' नाम से जाना जाता है | इस लिए कई बार ठुमरी शैली के चाँचर ताल में बंधे ऐसे होली गीतों को लोक संगीत में 'चाँचर' गीत भी कहते हैं | ठुमरी के अंतर्गत इन्हें 'होली दीपचंदी' ऐसे भी जाना जाता है | इस के अतिरिक्त दादरा, कहरवा ताल में बंधी हुई रचनाएँ भी सामान्य रूप से उपलब्ध हैं | कम प्रमाण में त्रिताल की रचनाएँ भी देखने को मिलती हैं |**

उदाहरण:

1) **राग-काफी ताल- म. दीपचंदी**

स्थायी-- ब्रिज में हरी होरी मचाई सखी री |

अंतरा-- इत सों निकसी कुँवरी राधिका
उत सों कुँवर कन्हाई
खेलत फाग परस्पर हिलमिले
सो सुख बरनी न जाई
सो घर घर बजत बधाई | [112]

[112] भातखंडे, वि. ना. (2017). *हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका भाग-2.* इलाहबाद: संगीत सदन प्रकाशन. पृष्ठ 345.

स्थायी.

सा	सा	—	रे	—	रे	सा रें	म ग	—	—	म	—	—	म
ब्रि	ज	ऽ	में	ऽ	ह	रि	हो	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	म
×			२				०			३			
प	—	—	प	—	ध	प	म	ग	—	म	ग	(म)	—
चा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	स	खी	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

अंतरा

प	प	—	रें	—	—	—	रें	रें	—	गं	रें	गं	—
इ	त	ऽ	सों	ऽ	ऽ	ऽ	नि	क	ऽ	सी	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
सां	रें	—	नि	—	नि	—	सां	सां	—	रें	—	मं गं	—
कु	व	ऽ	रि	ऽ	रा	ऽ	ऽ	धि	ऽ	का	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
सां	रें	—	सां	—	नि	—	ध	ध म	—	प	—	—	ध
उ	त	ऽ	सौं	ऽ	ऽ	ऽ	कु	व	ऽ	र	ऽ	ऽ	क
×			२				०			३			

सां नि	—	—	ध नि	—	—	—	सां	—	—	—	—	—	—
न्हा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
म	—	—	ग	—	—	ग	म	—	—	प	—	—	ध
खे	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	त	फा	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ऽ	प
×			२				०			३			
सां	—	नि	ध	—	—	म	प ध	—		(म)	—	ग	—
र	ऽ	ऽ	स्प	ऽ	ऽ	र	हि	ल	ऽ	मी	ऽ	ले	ऽ
× सां			२				०			३			
नि	—	—	सां	—	नि	—	सां	सां	—	नि	—	सां	रें
सो	ऽ	ऽ	सु	ऽ	ख	ऽ	ब	र	ऽ	नी	ऽ	ऽ	न
×			२				०			३			
सां	नि	—	ध	—	—	प	ध	प	—	प	—	म	ग
जा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	सो	ध	र	‘ऽ	ध	ऽ	र	ऽ
			२				०			३			

प म	म	नि	ध	-	नि	ध	ध प	ध	प	म	ग	(म)	-
व	ज	ऽ	त	ऽ	ऽ	ब	धा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
सा	सा	-	रे	-	रे	सा रें							
ब्रि	ज	ऽ	में	ऽ	ह	रि							
×			२										

[113]

2) राग—काफी　　　　ताल—दीपचंदी

स्थायी—ऐसी होरी खिलाई

श्याम मैं को चोरी लगाई |

अंतरा—खेलत गेंद गिरी जमुना में

किन्ने मेरी गेंद चुराई | [114]

---

[113] भातखंडे, वि. ना. (2017). *हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका भाग-2.* इलाहबाद: संगीत सदन प्रकाशन. पृष्ठ 345.

[114] पूछवाले, रा. (1952). *ठुमरी तरंगिणी.* ग्वालियर. पृष्ठ 37

अंतरा.

म	—	—	—	—	प	ध	सां नि	—	—	सां	—	—	—
खे ×	ऽ	ऽ	ऽ २	ऽ	ल	त	गें ०	ऽ	ऽ	दृ ३	ऽ	ऽ	ऽ
नि	नि	—	सां	—	नि	—	सां	—	—	धनि	सांनि	धानि	—
गि × ध	री	ऽ	ज २	ऽ	भु	ऽ	ना ०	ऽ	ऽ	मेंऽ ३	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
नि	—	ध	प	—	प	—	पध	निध	पम	—	—	प	ध
कि × सां	ऽ	न्ने	मे २	ऽ	री	ऽ	गेंऽ ०	ऽऽ	ऽऽ	ऽ ३	ऽ	द	चु
नि	—	—	—	—	—	—	सां	—	—	—	—	—	—
रा ×	ऽ	ऽ	ऽ २	ऽ	ऽ	ऽ	ई ०	ऽ	ऽ	ऽ ३	ऽ	ऽ	ऽ

115

वर्षा ऋतू से सम्बंधित लोक गीत

भारत के कई प्रदेशों में लोकगीत के ऐसे प्रकार प्रचलित है जो कि वर्षा ऋतू से सम्बंधित होते हैं, क्योंकि भारतीय संस्कृति में, उसके लोक जीवन में वर्षा ऋतू का अत्यंत महत्व रहा है | वर्षा ऋतू भारत के कृषिप्रधान बहुजन समाज एवं उस पर आधारित अन्य समाजों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है | भारतीय उपखंड में वर्षा ऋतू में वातावरण भी आल्हादक रहता है – नदी-नाले-तालाब वर्षा के पानी से पुन:पूर हुए होते हैं, भू-दृश्य में हरियाली छा जाती है, काले- घने बादलों के चलते सूर्य की धूप की तीव्रता भी बहुत कम हो जाती है और एकंदर वातावरण आनंददायक हो जाता है | वर्षा ऋतू के दौरान आनेवाले 'श्रावण / सावन' मास में कई सारे हिन्दू त्यौहार भी आते हैं | इस कारण भारत में लोक संगीत के अंतर्गत वर्षा ऋतू के प्राकृतिक वर्णन और उस समय के दौरान की जानेवाली प्रवृत्तियों पर आधारित कई गीत प्रकार पाए जाते हैं | उन्हीं में से उत्तर भारत में प्रचलित कुछ प्रकार हैं 'कजली / कजरी', 'झूला', 'सावन/सावनी', 'मल्हार' आदि | इनमें से 'उपशास्त्रीय विधा

[115] पूछवाले, रा. (1952). *ठुमरी तरंगिणी.* ग्वालियर. पृष्ठ 37

ठुमरी' के अंतर्गत प्रचुरता से प्रस्तुत होने वाले प्रकारों में 'कजरी','सावन/सावनी' एवं 'झूला' का समावेश होता है |

3.3 कजरी/ कजली

कजरी/ कजली एक वर्षाऋतू-कालीन लोक गीत है जिसे उत्तर भारत में पारम्पारिक रूप से अषाढ-सावन-भादों के महीनों में गाया जाता है | 'कजरी' शब्द का सम्बन्ध काजल के लिए प्रयुक्त होने वाले 'कजरा' शब्द से और वर्षा ऋतू के काले-काले बादलों से बताया जाता है | [116] कजरी गीतों का सम्बन्ध उत्तर प्रदेश तथा बिहार तथा आसपास के प्रदेश में भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की तृतीया को आने वाले 'कजली तीज' के त्यौहार से भी है क्योंकि पारम्पारिक रूप से इस पर्व के पहले से इस पर्व के दिन तक इस पर्व की देवी 'कजलीमाता' की स्तुति में स्त्रीयों द्वारा कजरी/ कजली गीत गाने की और कजली खेलने की प्रथा भी प्रचलित है | [117] लोक परिवेश में कजरी का गायन ज्येष्ठ मास के गंगा दशहरा से लेकर नाग पंचमी से कजली तीज तक करने का विधान है | गंगा दशहरा से लेकर तीन महीने और तेरा दिनों तक कजरी गाने का समय बताया जाता है | इस समय कजरी गायन अपने चरम पर होता है | [118]

कजरी गायन के बारे में यह मान्यता प्रचलित है कि "कजरी का मायका मिर्ज़ापुर है और ससुराल बनारस |" [119] इसलिए लोक संगीत के सन्दर्भ में मिर्जापुरी कजरी का एक विशेष स्थान है |

लोक संगीत के अंतर्गत प्रस्तुत होनेवाली कजरी में विषय के रूप में लोक जीवन के विविध व्यक्तिगत भावों एवं सामाजिक पक्षों का वर्णन मिलता है जैसे कि प्रेम, मिलन, विरह, वर्ष ऋतू का आनंद जैसे व्यक्तिगत भाव और सामाजिक रीति-कुरीतियाँ, विसंगतियाँ, राष्ट्रीय जागरण, लोक-चेतना जैसे सामाजिक पक्ष |

निम्नलिखित एक ही कजरी के दो रूप प्रस्तुत हैं जिसमें प्रथम रूप में वर्षा में भीगने को आतुर नायिका और उसकी ननद को संबोधित संभाषण वर्णित है और दुसरे रूप में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय की स्थिति का वर्णन है जो कि तत्कालीन परिवेश में बहुत लोकप्रिय हुआ था |

---

[116] मिश्र, प्रे. (2011). *उत्तर प्रदेश का लोक संगीत- कजली की परम्परा.* उत्तर प्रदेश की लोक संस्कृति परंपरा और प्रतिबिम्ब (पृष्ठ 71). वाराणसी: नृत्य विभाग, संगीत एवं कला संकाय, काशी हिन्दू विश्व विद्यालय.

[117] सिंह, सं. कु. (2010). *भोजपुरी लोक संस्कृति वाम हिन्दुस्तानी संगीत.* नई दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स. पृष्ठ. 133.

[118] सिंह, सं. कु. (2010). *भोजपुरी लोक संस्कृति वाम हिन्दुस्तानी संगीत.* नई दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स. पृष्ठ. 135.

[119] सिंह, सं. कु. (2010). *भोजपुरी लोक संस्कृति वाम हिन्दुस्तानी संगीत.* नई दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स. पृष्ठ. 135.

उदाहरण: **मिर्जापुरी कजरी**

1) इस रूप में सामान्य नायिका वर्षा में कजरी खेलने जाने के लिए आतुर है और अपनी ननद से संभाषण कर रही है, जिसमें उसके मनोभाव व्यक्त होते हैं |

स्थायी—कईसे खेलन जईबू सावन में कजरीया
बदरिया घेरी आई ननदी |

अंतरा—तू तो जात हो अकेली तोहरे संगे ना सहेली
गुंडा रोक लिहे तोहरी डगरिया
बदरिया घेरी आई ननदी |

अंतरा—गंगा माई की कसम तोहें जाहें ना देंगे हम
जब तू जात लगबू छेकब हम डगरिया
बदरिया घेरी आई ननदी | [120]

2) इस दुसरे रूप में उपरोक्त कजरी का स्थायी वैसा ही है किन्तु अन्तरा के शब्द और इस कारण विषय भी बदल गए हैं |

स्थायी-- कइसे खेले जाई सावन में कजरिया
बदरिया घेरी आई ननदी |

अंतरा-- केतने खाय गईलन गोली केतने चढ़ल होईलें शूली
केतने पीसत होइहै जेहल में चकरिया
बदरिया घेरी आई ननदी |[121]

किन्तु उपशास्त्रीय विधा के अंतर्गत जब कजरी की प्रस्तुति होती है तो विषय वस्तु में केवल व्यक्तिगत भावों का वर्णन ही मिलता है, वहाँ पर सामाजिक विषयों का पूर्ण रूप से अभाव दिखता है , यह स्थिति शोध कार्य के लिए किए गए ठुमरी रिकॉर्डिंग संग्रह में तथा ठुमरी की प्रकाशित रचनाओं के संग्रह में कजरी एवं दादरा/कजरी गीतों के विषय को देखने से स्पष्ट होती है |

प्रकाशित पुस्तकों में उपलब्ध ठुमरी विधा की रचनाओं में 9 रचनाएँ 'कजरी' गीत प्रकार की हैं |

[120] विश्वकर्मा, रा. न. (2011). पूर्वी लोक गीत. इलाहबाद: संगीत सदन प्रकाशन. पृष्ठ 79.

[121] विश्वकर्मा, रा. न. (2011). पूर्वी लोक गीत. इलाहबाद: संगीत सदन प्रकाशन. पृष्ठ 79.

क्र.	ठुमरी	राग	ताल	प्रकार	विषय	स्रोत
242	मेहा बरसे, बरसे नैना	मि. देस	दीपचंदी	ठुमरी/कजरी	वर्षाऋतू-सामान्य नायिका के मनोभाव	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
245	कैसे जाऊँ मिलन पिया री	मि. देस	दादरा	दादरा/कजरी	वर्षाऋतू-सामान्य नायिका के मनोभाव	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
252	निस दिन बरसत मोरे नैनवा	मि. काफी मल्हार	दीपचंदी	ठुमरी/कजरी/ झुला	वर्षाऋतू-सामान्य नायिका के मनोभाव	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
278	तोरी याद सताए दिन-रैन	मि. पीलु	दीपचंदी	ठुमरी/कजरी	वर्षाऋतू-सामान्य नायिका के मनोभाव	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
288	बरसन लागी, मैं हूँ अकेली	मि. गारा	द्रुत कहरवा	दादरा/कजरी	वर्षाऋतू-सामान्य नायिका के मनोभाव	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
291	बरसन लागी, पिया घर नाहीं	मि. गारा	द्रुत कहरवा	दादरा/कजरी	वर्षाऋतू-सामान्य नायिका के मनोभाव	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
293	आई ऋतु सावन की	मि. मल्हार	द्रुत दीपचंदी	दादरा/कजरी/ सावनी/झूला	वर्षाऋतू-सामान्य नायिका के मनोभाव	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
294	बूँद-बूँद लागे बरसन	मि. गारा मल्हार	द्रुत कहरवा	दादरा/कजरी	वर्षाऋतू-सामान्य नायिका के मनोभाव	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
296	नदिया धीरे बहो	मि. मारू बिहाग	द्रुत कहरवा	दादरा/कजरी	सामान्य नायिका के मनोभाव	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे

इस शोध कार्य के अंतर्गत ठुमरी के रिकॉर्डिंग का संग्रह किया है उसमें 10 रिकॉर्डिंग 'कजरी' गीतप्रकार के हैं |

क्र..	गीत	प्रकार	विषय	ताल	राग	कलाकार
28	कहनवा मानो हो राधा रानी...	दादरा/कजरी	श्रीकृष्ण	दादरा	मि. पिलू	गिरिजा देवी
38	बरसन लागी बदरिया रूम झूम के...	दादरा/कजरी	वर्षा-श्रीकृष्ण	दादरा	मि. खमाज	गिरिजा देवी
57	बरसन लागी बदरिया झमझूमके...	ठुमरी/कजरी	वर्षा-श्रीकृष्ण	दादरा	मि. खमाज	छन्नुलाल मिश्रा
59	गोरीया पाई नाही सैया के सावनवा में...	कजरी	सामान्य नायिका के मनोभाव	दादरा	मि. खमाज	छन्नुलाल मिश्रा
69	कैसे जाऊँ मिलन पिया रें...	कजरी	सामान्य नायिका के मनोभाव	दादरा	मि. देस	धनाश्री पंडीत
75	घिर के आयी बदरीयाँ...	कजरी	सामान्य नायिका के मनोभाव	दादरा	मि. पिलू	प्रभा अत्रे
79	बरसन लागी 1	दादरा/कजरी	सामान्य नायिका के मनोभाव	कहरवा	मि. गारा	प्रभा अत्रे
80	बरसन लागी 2	दादरा/कजरी	सामान्य नायिका के मनोभाव	कहरवा	मि. गारा	प्रभा अत्रे

148	नहीं आये घनश्याम घीर आयी बदरी...	कजरी	श्रीकृष्ण-वर्षा	कहरवा	पिलू	शोभा गुर्टू
168	जब सुधि आवे	कजरी	सामान्य नायिका के मनोभाव	कहरवा	देस	सिद्धेश्वरी देवी

निम्नलिखित उदाहरण उपशास्त्रीय ठुमरी विधा के अंतर्गत कलाकारों ने जब 'कजरी' प्रस्तुत की है उसके हैं :

1) ताल- दादरा कलाकार- पं. छन्नूलाल मिश्र

स्थायी- बरसन लागी बदरिया रूम-झूम के
रूम-झूम रूम-झूम रूम-झूम के |

अंतरा- आयो सावन अति मनभावन
सखियाँ गावे कजरिया झूम झूम के |

अंतरा- झूलत हरी संग राधे पलना
पहिने कुसुम रंग चुँदरिया रे | [122]

[122] परिशिष्ट 1 विविध कलाकारों द्वारा ठुमरी के प्रस्तुतिकरण के रिकॉर्डिंग के संग्रह की सूची : क्र.57

स्थायी-

१	२	३	४	५	६
		ग	ग	ग	म
		ब	र	स	न
x			0		
ग	-	गरे	सा	-	रे
ला	ऽ	गीऽ	ऽ	ऽ	ब
x			0		
नि़	नि़	-	सा	-	-
द	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ
x			0		
सारे	ग	रे	गम	पध	पम
रूऽ	ऽ	म	झुऽ	ऽऽ	ऽम
x			0		
ग	-	नि	नि	नि	सां
के	ऽ	रू	म	झू	म
x			0		
प	सां	नि	ध	प	प
रू	ऽ	म	झू	ऽ	म
x			0		
प	प	ध	प	प	म
रू	ऽ	म	झू	ऽ	म
x			0		
गरे	सा	ग	ग	ग	म
केऽ	ऽ	ब	र	स	न
x			0		
ग	-	गरे	सा	-	रे
ला	ऽ	गीऽ	ऽ		
x			0		

अंतरा- 1

१	२	३	४	५	६
~~[illegible]~~		ग	-	म	ग
		आ	ऽ	यो	ऽ
x			0		
प	—	—	प	प	—
शा	ऽ	ऽ	व	न	ऽ
x			0		
—	—	म	ध	ध	नि
		अ	ति	म	न
x			0		
प	ध	—	प	प	—
भा	ऽ	ऽ	व	न	ऽ
x			0		
—	—	—	ग	ग	म
ऽ	ऽ	ऽ	स	खि	याँ
x			0		
ग	—	गरे	सा	~~रे~~ —	रे
गा	ऽ	बैऽ	ऽ	ऽ	क
x			0		
नि़	नि़	—	सा	—	—
अ	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ
x			0		
सारे	~~सारे~~ ग	रे	गम	पध	पम
झूऽ	ऽ	म	झूऽ	ऽऽ	ऽम
x			0		
ग	—	ग	ग	ग	म
के	ऽ	ब	र	स	न
x			0		
ग	—	गरे	सा		
ला	ऽ	गीऽ	ऽ		
x			0		

अंतरा- 2

१	२	३	४	५	६
		सा	रे	नि	सा
		झू	ऊ	ल	त
x			०		
रे	रे	-	रे	रे	-
ह्व	रि	ऊ	सं	ग	ऊ
x			०		
-	-	मैं	-	प	मैं
		रा	ऊ	धे	ऊ
x			०		
प	ग	प	म	ग	-
ऊ	प	ल	ना	ऊ	ऊ
x			०		
		नि	नि	नि	सां
		प	हि	ने	कु
x			०		
नि	नि	-	ध	प	प
सु	म	ऊ	सं	ग	ऊ
x			०		
पध	निध	प	प	म	-
चुंऊ	ऊऊ	द	रि	या	ऊ
x			०		
ग	रे	ग	ग	ग	म
रे	ऊ	ब	र	स	न
x			०		
ग	-	गरे	सा		
लो	ऊ	गिऊ	ऊ		
x			०		

2) ताल- दादरा कलाकार- श्रीमती गिरिजा देवी जी

स्थायी- कहनवा मानो हो राधा रानी

निशि अंधियारी कारी बिजरी चमके

रूम झूम बरसत पानी |

अंतरा- हाथ जोड़ तोरी बिनती करत हूँ

ना माने मोरी बानी | [123]

स्थायी-

१	२	३	४	५	६
					सा
×			०		क
सा	सा	-	रेग	म	-
ह	न	ऽ	वाऽ	ऽ	ऽ
×			०		
रे	-	ग	रेसा	-	-
मा	ऽ	ऽ	नोऽ	ऽ	ऽ
×			०		
निसा	ऽ	ऽ	नि़ध़	-	नि़
होऽ	ऽ	ऽ	राऽ	ऽ	धा
×			०		
सा	-	-	सा	-	-
रा	ऽ	ऽ	नी	ऽ	ऽ
×			०		

[123] परिशिष्ट 1 विविध कलाकारों द्वारा ठुमरी के प्रस्तुतिकरण के रिकॉर्डिंग के संग्रह की सूची : क्र.28

सा	सा	–	रेग	ग	–
नि	शि	ऽ	अँ	धि	ऽ
×			0		
ग	ग	–	ग	ग	–
या	री	ऽ	का	री	ऽ
×			0		
–	–	ग	ग	म	गम
ऽ	ऽ	बि	ज	री	ऽऽ
×			0		
रे	–	ग	गरे	सा	–
च	ऽ	म	केऽ	ऽ	ऽ
×			0		
–	–	ग	ग	ग	ग
		रुं	म	झु	म
×			0		
ग	–	म	ग	–	म
ब	ऽ	र	स	ऽ	त
×			0		
रे	–	मग	रेसा	–	सा
पा	ऽ	ऽ	नीऽ	ऽ	क
×			0		
सा	सा	–	रेग	म	–
ह	न	ऽ	वाऽ	ऽ	ऽ
×			0		
रे	–	ग	रेसा	–	–
मा	ऽ	ऽ	नोऽ	ऽ	ऽ
×			0		

अंतरा-

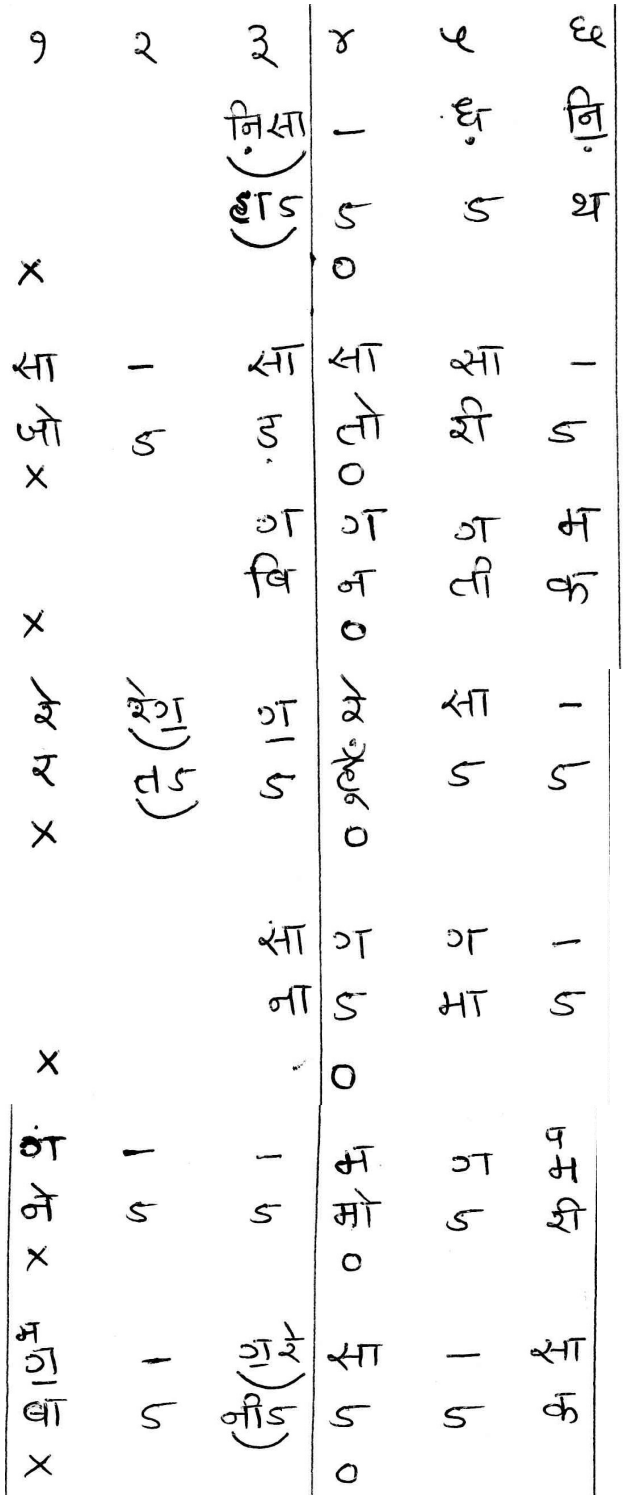

१	२	३	४	५	६
		निसा	—	धृ	नि
		होऽ	ऽ	ऽ	थ
×			०		
सा	—	सा	सा	सा	—
जो	ऽ	ड़	तो	री	ऽ
×			०		
		ग	ग	ग	म
		बि	न	ती	क
×			०		
रे	रेग	ग	रे	सा	—
र	तऽ	ऽ	है	ऽ	ऽ
×			०		
		सा	ग	ग	—
		ना	ऽ	मा	ऽ
×			०		
गं	—	—	म	ग	पम
ने	ऽ	ऽ	मो	ऽ	री
×			०		
मग	—	गरे	सा	—	सा
बा	ऽ	नीऽ	ऽ	ऽ	क
×			०		

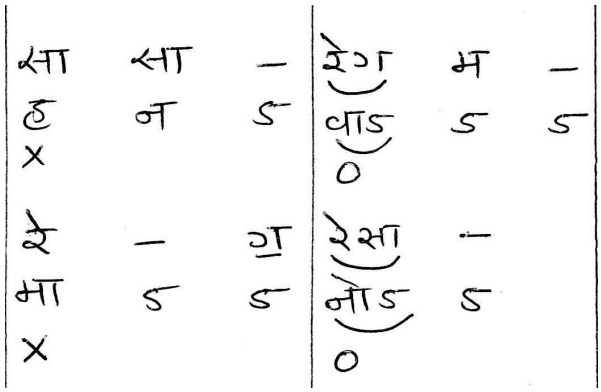

3.4 झूला

'झूला', जिसे 'हिंडोला' [124] भी कहा जाता है, एक मौसमी लोक गीत प्रकार है जो वर्षा ऋतू से जुड़ा हुआ है | पारम्पारिक रूप से जब सावन के महीने में वातावरण आल्हाददायक होता है तब गाँवों के आस पास के बड़े वृक्षों की टहनियों पर झूले बांधकर उस पर आनंददायक गीत गाने की प्रथा पूरे भारत वर्ष में किसी न किसी रूप में अस्तित्व में रही है | उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, राजस्थान जैसे उत्तर भारतीय प्रदेशों में भी यह परंपरा रही है | इन झूलों पर जो गीत गाये जाते थे उनको 'झूला' नाम से जाना गया | पारम्पारिक रूप से लोक संगीत का भाग रहे 'झूला' गीतों को ठुमरी विधा के पूरब अंग के कलाकारों ने अपनी ख़ास शैली में प्रस्तुत किया और परिष्कृत होते-होते इनका समावेश वर्तमान युग में ठुमरी विधा के अंतर्गत किया जाता है |

प्रकाशित पुस्तकों में उपलब्ध ठुमरी विधा की रचनाओं में केवल 2 रचनाएँ 'झूला' गीत प्रकार की हैं |

क्र.	ठुमरी	राग	ताल	प्रकार	विषय	स्रोत
252	निस दिन बरसत मोरे	मि. काफी	दीपचंदी	ठुमरी/कजरी/झुला	वर्षाऋतू- सामान्य नायिका	स्वररंगी – डॉ.

[124] Pradhan, A. (2017, Aug 12). *Rain, romance and rhythm come together in these jhoola folk songs.* Retrieved from https://scroll.in/article/846919/rain-romance-and-rhythm-come-together-in-these-jhoola-folk-songs

	नैनवा	मल्हार			के मनोभाव	प्रभा अत्रे
293	आई ऋतु सावन की	मि. मल्हार	द्रुत दीपचंदी	दादरा/कजरी/सावनी/ झूला	वर्षाऋतू- सामान्य नायिका के मनोभाव	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे

इस शोध कार्य के अंतर्गत ठुमरी के रिकॉर्डिंग का संग्रह किया है उसमें 5 रिकॉर्डिंग 'झूला' गीतप्रकार के हैं |

अनु. नं.	**गीत**	**प्रकार**	**विषय**	**ताल**	**राग**	**कलाकार**
17	बदरिया रे बदरिया बरसे बदरिया...	झूला	वर्षा- सामान्य नायिका के मनोभाव	दादरा	पिलू	अश्विनी भिडे-देशपांडे
33	झूला धीरे से झूलावो बनवारी...	झूला	श्रीकृष्ण	कहरवा	मि. तिलक कामोद	गिरिजा देवी
51	झुला धीरे से झूलाओ...	झूला	श्रीकृष्ण	कहरवा	मि. मांज खमाज	छन्नुलाल मिश्रा
136	धीरे धीरे झुलावो सुकुमारी सियाहो झूला...	झूला	श्रीराम-सीता	दादरा	पीलू	शुभा मुद्गल
138	सखी चलो री कदंब तले छोडी काम धाम...	झूला	श्रीकृष्ण	कहरवा	मि. गारा	शुभा मुद्गल

इन झूला गीतों के विषय के रूप में 'राधा-कृष्ण तथा अन्य गोपियों के झूले' **बहुत ही प्रचलित हैं** | वर्षा ऋतू में गोकुल-**वृन्दावन में यमुना के तट पर** कदम्ब के वृक्ष की डाली पर झूला बाँध कर **श्रीकृष्ण और** गोप-गोपियाँ झूले ले रहे हैं **ऐसे वर्णन इन रचनाओं में** प्रचुरता से मिलते हैं |

उदाहरण के लिए, **निम्नलिखित प्रसिद्ध** 'झूला' में ऐसा ही वर्णन मिलता है :

झूला

Jhula dheere se jhulao banwari re sanvariya.mp3

Krishna - Jhula Dheere se jhulao - Pt. Chhannulal Mishra.mp4

स्थायी- झूला धीरे से झुलाओ बनवारी, रे साँवरिया |

अंतरा- 1) झूला झूलत मोरा जियरा डरत है,

लचके कदमवा की डारी, रे साँवरिया |

2) **अगल बगल में** सखियाँ झूलत हैं,

बीच में झूले राधा रानी, रे साँवरिया |

3) **कृष्ण झूलावे राधा** झूलत है,

निरखत सब नर-नारी, रे साँवरिया | [125]

स्थायी :

1	2	3	4	5	6	7	8
				ज	–	ज	–
				झू	ऽ	ला	ऽ
×				०			
–	–	ग	म	–	म	–	म
ऽ	ऽ	धी	रे	ऽ	से	ऽ	झू
×				०			
म	ग	रे	ग	रे	सा	सा	–
ला	ऽ	वो	ऽ	ब	ऽ	न	ऽ
×				०			

[125] परिशिष्ट 1 **विविध कलाकारों द्वारा ठुमरी के प्रस्तुतिकरण के रिकॉर्डिंग के संग्रह की सूची** : क्र.53

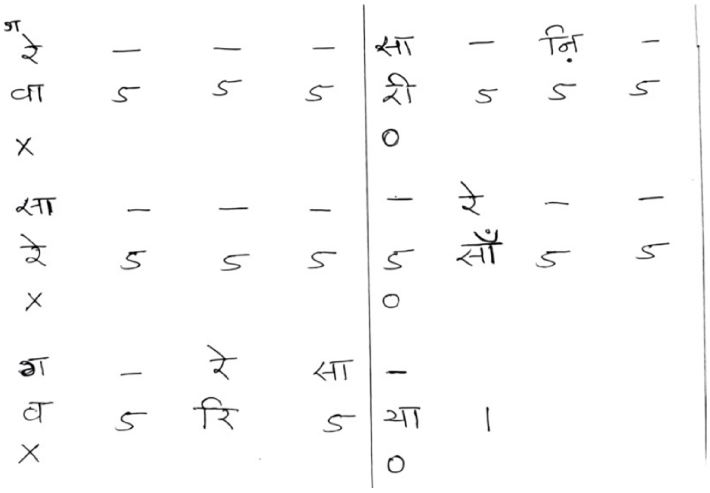

अंतरा:

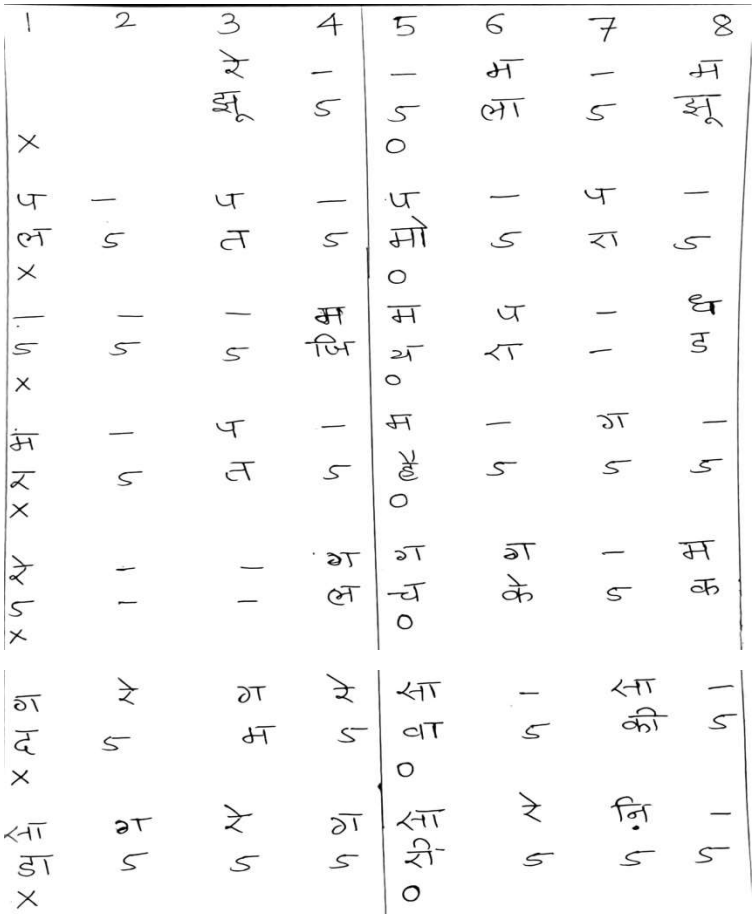

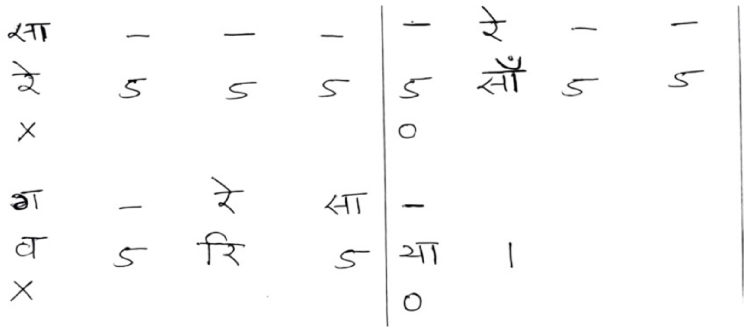

उपरोक्त झूला शोध-कर्ता के रिकोर्डिंग-संग्रह में पूरब अंग की ठुमरी के प्रसिद्ध कलाकार पद्म विभूषण स्व. पं. गिरिजा देवी तथा पद्म भूषण पं. छन्नूलाल मिश्र के स्वर में समाविष्ट है |

अन्य एक उदाहरण :

झूला

Sakhi chalo ri kadamb tale chhodi kaam dhaam Mishra Gara.mp3

स्थायी-- सखी चलो री कदम्ब तले छोड़ी काम-धाम,
झूले रमक हिंडोले जहाँ राधा-घनश्याम |

अंतरा-- सोभा देखिके सिराने नयन पूरे हर काम,
हरी चन्द्र देखो उरझी करे मन मान | [126]

उपरोक्त झूला शोध-कर्ता के रिकोर्डिंग-संग्रह में प्रसिद्ध कलाकार पद्मश्री शुभा मुद्गल के स्वर में समाविष्ट है |
शुभा मुद्गल जी के ही स्वर में एक रेकोर्डिंग ऐसी मिलती है जिसमें श्रीकृष्ण और गोप-गोपियों का वर्णन न होकर अयोध्यानरेश श्री रामचंद्रजी और सीताजी का वर्णन है |

[126] परिशिष्ट 1 **विविध कलाकारों द्वारा ठुमरी** के प्रस्तुतिकरण के रिकॉर्डिंग के संग्रह की सूची : क्र.138

झूला

04_DHEERE_DHEERE_JHULAO_.MP3

स्थायी- धीरे धीरे झूलाओ सुकुमारी सिया हो |

अंतरा- 1) झूले सरजू के तीर पहिने/ले रेसम के चीर

नागिन बेनियाँ डुलाये सुकुमारी सिया हो |

2) झूले अवध बिहारी संग सिया सुकुमारी

झोंका धीरे लगावो सुकुमारी सिया हो | [127]

3.5 सावन/सावनी

ये भी वर्षा ऋतू में ही गाए जानेवाले, वर्षा से सम्बंधित लोक गीत हैं जो कि समय के साथ लोक संगीत की विधा के साथ ही उपशास्त्रीय विधा ठुमरी के अंतर्गत प्रस्तुत होते हैं | भारतीय पंचांग के अनुसार वर्षा ऋतू में आनेवाले 'सावन' या 'श्रावण' मास से इनका नाम 'सावन' या 'सावनी' पड़ा होना चाहिए | इसमें भी कजरी गीतों के जैसे वर्षा ऋतू के काले बादल, तेज या रिम झिम बारिश, चमकती हुई बिजली इत्यादि का सुन्दर वर्णन और ऐसे वातावरण में नायिका के मनोभाव अथवा कृष्ण-ब्रिन्दावन-गोप-गोपी इन विषयों का वर्णन देखने को मिलता है |

प्रकाशित पुस्तकों में उपलब्ध ठुमरी विधा की रचनाओं में 12 रचनाएँ 'सावन/सावनी' गीत प्रकार की हैं |

क्र.	ठुमरी	राग	ताल	प्रकार	विषय	स्रोत
177	कारी रैन पापी पपीहा	देस	दादरा	सावन	वर्षाऋतू और विरह-सामान्य	म. नर्तक शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग

[127] परिशिष्ट 1 विविध कलाकारों द्वारा ठुमरी के प्रस्तुतिकरण के रिकॉर्डिंग के संग्रह की सूची : क्र.136

					नायिका के मनोभाव	२-- न. शं. भावे
178	कारे आये आज बादरा	देस	त्रिताल	सावन	वर्षाऋतू	म. नर्तक शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग २-- न. शं. भावे
180	घन घुमण्ड घुमण्ड	देस	त्रिताल	सावन	वर्षाऋतू और विरह-सामान्य नायिका के मनोभाव	म. नर्तक शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग २-- न. शं. भावे
181	घन गगन घन	देस	त्रिताल	सावन	वर्षाऋतू और कृष्णलीला	म. नर्तक शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग २-- न. शं. भावे
182	घन घटा घेर रही	देस	त्रिताल	सावन	वर्षाऋतू और विरह-सामान्य नायिका के मनोभाव	म. नर्तक शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग २-- न. शं. भावे
185	आए बदरा कारे	नट-मल्लार	त्रिताल	सावन	वर्षाऋतू और विरह-सामान्य नायिका के मनोभाव	म. नर्तक शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग २-- न. शं. भावे
188	दादरवा बोलाई रे	नट-मल्लार	त्रिताल	सावन	वर्षाऋतू और विरह-सामान्य नायिका के	म. नर्तक शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग २-- न. शं. भावे

					मनोभाव	
189	मिघवा झरझर	नट-मल्लार	त्रिताल	सावन	वर्षाऋतू और विरह-सामान्य नायिका के मनोभाव	म. नर्तक शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग २-- न. शं. भावे
209	हो सखी पिया नहीं आए	बागेश्री (मि.)	वि. रूपक	सावन	वर्षाऋतू और विरह-सामान्य नायिका के मनोभाव	म. नर्तक शेख़ राहत अली इनका ठुमरी संग्रह भाग २-- न. शं. भावे
264	बिदेसी सैंया रे	मि. मांजखमाज	दीपचंदी	ठुमरी/सावन	वर्षाऋतू-सामान्य नायिका के मनोभाव	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
293	आई ऋतु सावन की	मि. मल्हार	द्रुत दीपचंदी	दादरा/कजरी/सावनी/झूला	वर्षाऋतू-सामान्य नायिका के मनोभाव	स्वररंगी – डॉ. प्रभा अत्रे
317	लाग रही ए री ए	पीलू	रूपक	ठुमरी-सावन	सामान्य नायिका के मनोभाव	हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ३ – वि. ना. भातखंडे

इस शोध कार्य के अंतर्गत ठुमरी के रिकॉर्डिंग का संग्रह किया है उसमें एक भी रिकॉर्डिंग में 'सावन' गीतप्रकार का उल्लेख नहीं है |

उपरोक्त कोष्टकों के अवलोकन से यह पता चलता है कि सावन गीतों में विषय के तौर पर सामान्यत: नायिका के मनोभाव ही वर्णित हैं | कृष्ण सम्बंधित काव्य इस शोध के दौरान सावन गीत में नहीं देखने को मिला है | यदि हो तब भी उसका प्रमाण गौण ही होगा ऐसा शोधकर्ता का अनुमान है |

****